Jh vjfon lkslkbVh] ikfMpjh 'kf{kd Hkze.k dk ifronu
¼fnukd 20 l 25 viy 2010½

श्री अरविंद सोसाइटी पाडिचेरी द्वारा श्री अरविंद जी के दर्शन पर आधारित अंर्तराष्ट्रीय विद्यालय 1952 से संचालित हो रहा है। चूंकि वर्तमान में पूरे प्रदेश में चेतना विकास मूल्य शिक्षा पर कार्य हो रहा है। अतः इस परिप्रेक्ष्य में अभ्युदय संस्थान के 11 सदस्यों के साथ स्कूल शिक्षा विभाग के 9 सदस्यों का दल उक्त तिथि में शैक्षिक भ्रमण पर थे। भ्रमण दल के समन्वयक अभ्युदय संस्थान के प्रबोधक श्री योगेश शास्त्री जी थे तथा श्री अरविंद सोसाइटी में इस कार्यक्रम के समन्वयक वहां के साधक श्री शिवकुमार जी थे।

इस विद्यालय का संपूर्ण कार्यक्रम संपूर्ण शिक्षा पर केन्द्रित है जहॉ शारिरिक, मानसिक एवं भावनात्मक शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाता है। यहॉ गुरू शिष्य संबंध अत्यन्त प्रगाढ़ है। यहॉ गुरू वेतनभोगी नहीं है वरन् आश्रम का ही साधक है जो कि अपने कार्य को पूरे समर्पण भाव से करने में विश्वास रखता है। यहॉ विद्यालय के विषयवस्तु में दर्शन का प्रत्यक्ष अध्ययन नहीं किया जाता किन्तु यह माना जाता है कि शिक्षक के आचरण को देखकर विद्यार्थी स्वयमेव दर्शन की बातों को आत्मसात कर सकेंगे। यहॉ न कोई मूल्यांकन है और न ही कोई प्रमाण पत्र दिया जाता है। जो भी विद्यार्थी यहॉ अध्ययनरत् है वे कैरियर के लिए नहीं वरन् केवल अपनी खुशी के लिए अध्ययन करते है।

5 दिन के इस शैक्षिक भ्रमण में अनेक सत्र हुए जिसमें से प्रमुख बिन्दु निम्नांकित है –

- 400 बच्चे 150 शिक्षक
- विद्यालय का समय सुबह 7.45 से शाम 6.00 बजे तक
- पूर्ण शिक्षा है, ग्रेडिग नहीं परीक्षा नहीं।
- शिक्षक का आचरण पाठ्यक्रम (शिक्षा कुछ करने की नही, होने की चीज होती है)
- 18 साल के शिक्षा में आपने क्या सिखा।
- जो आप बच्चों को देना चाहते हे वह आपके पास है या नहीं
- शिक्ष सूर्य के समान है। बच्चे खुटीमुखी के जैसे प्रकाश ले रहे हो।
- खुबसूरत वातावरण हो
-

शारिरिक	भावनात्मक	मानसिक
7 साल तक	7 से 14	14 से

- कहानी पत्थर पेड़ पौधे पक्षी जानवर की कहानी सुनाते सुनाते मानव तक आते है।
- जीवन लक्ष्य तक जाना है उसके लिए क्या क्या ही अंदर से आएगा थोपना नहीं है।
- शिक्षा लेकर अब साधक बनकर वापस आने वाले बच्चों का प्रतिशत मात्र 10 रह गई है पहले 909 था ।
- शिक्षक सहयोगी होता है सुविधा होता है।
- शिक्षक, विषय समय तीनों का चयन बच्चे ही करते हैं
- भय से अनुशासन बद्धता नहीं है स्वानुशास विधि यहॉ संचालित है

- बच्चे 8 से 10 भाषा शिक्षक से सिखते है।
- हम सब एक प्लान के साथ जन्म लिए है और वह पूर्ण करने में अपने को तत्पर रखता है।
- कर्मयोग पर जोर दिया गया है।
- अपनी संस्कृति को जानने के लिए हमें संस्कृत हमें संस्कृत जानना होना, हमारी अनुवाद पद्धति के कारण सही स्वरूप सामने नहीं आ पा रहा है।
- वर्ण का क्रम सुनियोजित क्रम में है। मात्र देवनागरी
- संस्कृत में एक संगीतमयता है जिससे एनर्जी मिलती है।
- शब्द के द्वार अर्थ तक संस्कृत हमें पहुचाती हैं
- संस्कृत में जैसा बोला वैसा लिखा होता है अन्य में नहीं
- अ से ह तक 52 ध्वनियॉ, इसके अलाावा और ध्वनियॉ नहीं है। सारे इसमें समारित है।
- बच्चे की विलक्षण क्षमता को पहचान कर उसे उभारना ही शिक्षक की क्रिया होती है।
- सभी बच्चों की समझने की तरिके अलग–अलग हो सकते है रूचि अनुसार बच्चे का च्वाइस?
- किसी बच्चे की रूचि यदि किसी विषय विशेष पर नहीं होता तो उसके कारण और उपाय पर जाते है
- बच्चों को कैरियर के लिए भर्ती नहीं करते, खुशी के लिए भर्ती होना चाहे तो ही मात्र 15 बच्चे 3 1/2 बच्चे।
- 13–14 के बाद 1 साल पूर्ण रूप से नेचुरल स्किल का प्रशिक्षण होता ही है।
- फ्रेच और संस्कृत नर्सरी दो, अंग्रेजी मातृभाषा का शिक्षण कक्षा 2 से होता है। हिन्दी गुजराती मराठी बंगाली डडिया तेलगु तमिल मलयालम।
- तीन अंतराष्ट्रीय भाषा का अध्ययन अनिवार्य है स्पेनिस, इटालियन जर्मन गणित विज्ञान विषय में।
- हर शिक्षक का रोल हर जगह रहता है।
- सिटें खाली भी हो तो 12 साल से अधिक उम्र के बच्चों को भर्ती नहीं देते है।
- एनुवल फग्सन छुट्टी के दिनों में ही होते है। नवम्बर दिसम्बर
- शिक्षक का प्राथमिक आवश्यकता ट्रस्ट से देते है प्लस 500 रू परमन्य देते है।
- यहॉ के शिक्षक यहा से दो पढ़े हुए है सभी अविवाहित ही है। वालेन्टियर भी यहॉ सेवा देते है।
- फिजीकल एजुकेशन पर जोर देते है। स्वस्थ्य शरर से ही लक्ष्य प्राप्त होगा।
- मेन पावर की कमी आ रही है। फंड की कमी आ रही है। चिंता का विषय है।
- कारपेन्ट्री
- फिजिकल चेलेन्ज बच्चे यहॉ नहीं लेते है।
- यहॉ से पढ़कर निकलने वाला बच्चा डिग्री के लिए नहीं पढ़ता है गर्व से बताता है।
- बच्चे की गलती का कारण शिक्षक होता है।
- स्वयं का मूल्याकंन स्वयं के द्वारा कि मै क्या और कितना सीखा है क्या नहीं सिख पाया हूँ।

- विचारों को केन्द्रित करने वाली चिज ऊर्जा है उसे हम ....कहते है।
- शिक्षक का आचरण पक्ष प्रबल होना आवश्यक हैं
- शिक्षक का गुण
- शिक्षक का दुर्गुण
- शिक्षक का अच्छेगुण कौन कौन से है
- पाजिटिव डेव्लपमेंट के लिए क्या किया जा सकता है।
- इच्छा शक्ति हेतु ध्यान देना पड़ेगा उदाहरण 100 कि. लो. क्रमशः
- चेतना विकास शिक्षा को मजाक बना दिये है जग सोचना होगा।
- क्षमता विकास हेतु काम (1) जागृत (2) इच्छा शक्ति विकास (3) नियंत्रण
- अच्छे शिक्षक के गुण
- शिक्षक के लेबल तक जाकर बात करें तो प्रभावी हो गया।
- सत्य सबके लिए एक है। गीता के बारे में भावना बदलने की आवश्यकता है यह सार्वभौम वस्तु है उसे समझना होगा।
- एक एक वर्ण का गहरा प्रभाव है उसका उच्चारण सही सही होना जरूरी है।
- पालकों की भूमिका स्कूल संचालन में नहीं थी, अब महसूस कर रहे हैं।
- बच्चों को आहार आदि के बारे में प्रतिबंध नहीं है।
- इतिहास में प्रेरणादायक कहानियॉ बताते है।
- टी.वी. दिखाना बच्चे की कल्पना शिलता पर आधारित होता है, जॉचना आना चाहिए

चतृर्थ दिवस

- फोल्डर के बिन्दु देने है।
- आर्ट पर सुशान्तों जी का बिचार बच्चों को बारिकी से देखना लेगा।
- चिल्डन कार्नर द्वारा सर्वम संस्था द्वारा शिक्षा में काम को बताना है।
- मातृकुंज में आर्गेनिक खेती का ब्यौरा देना है।
- 45 एकड़ में आर्गेनिक खेती 42 एकड़ खेली फूल की खेती होती है खेती में जीवामृत का प्रयोग फलों के खेती, सब्जी की खेली हुआ है।

vkj- ,l- c?ky]
d-d- lkg
i dk"B iHkkjh]
pruk fodkl eY; f'k{kk]
, l-lh-b-vkj-Vh-] jk;i j

jk"Vh; ek/;fed f'k{kk vfHk;ku ds vrxr ,MlsV }kjk laiUu 5 fnolh; izf'k{k.k dh leh{kk cBd

izfrosnu

''15 दिवसीय जीवन विद्या परिचय शिविर एडूसेट द्वारा''
(दिनांक 07 फरवरी से 23 फरवरी 2010)

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA) के तहत् छ.ग. के हायर सेकेण्डरी एवं हाईस्कूलों'' में कार्यरत् सभी व्याख्याताओं एंव शिक्षाकर्मी वर्ग–01 के लिए ''चेतना विकास मूल्य शिक्षा'' पर आधारित 5 दिवसीय जीवन विद्या शिविर का आयोजन एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रदेश भर में स्थित कुल 115 एडूसेट सेंटरों में दिया गया।

यह 15 दिवसीय शिविर कुल 3 चरणों में 5–5 दिन तक प्रत्येक व्याख्याता एवं शि.क.–01 को दिया गया जो कि इस प्रकार रहा।

01. प्रथम चरण – 07 फरवरी से 11 फरवरी 2010
02. द्वितीय चरण – 13 फरवरी से 17 फरवरी 2010
03. तृतीय चरण – 19 फरवरी से 23 फरवरी 2010

तीनों चरणों में लगभग 9800 लोग शामिल हुए और इनमें से लगभग 2265 लोग स्वेच्छा से 7 दिवसीय प्रत्यक्ष शिविर अमरकंटक/रायपुर/अछोटी में करने की स्वीकृति दिए है। एडूसेट से दिया गया यह शिविर केसा रहा ? इसकी समीक्षा बैठक परिषद् कार्यालय में शिविर समाप्ति के तुरन्त बाद दिनांक 25 एवं 26 फरवरी 2010 को रखा गया। जिसमें प्रदेश भर में फैले सभी एस.आई.टी. केन्द्रों में नियुक्त सहायक प्रबोधकों तथा मुख्य प्रबोधक श्री सोमदेव त्यागी सहित संचालक श्री नंदकुमार जी एवं परिषद् के रा.मा.शि.अभि. के प्रभारीगण, एडूसेट के सभी अधिकारी कर्मचारी तथा जीवन विद्या अभिप्रेरणा प्रकोष्ठ के प्रभारी गण इन दो दिनों तक उपस्थित रहकर शिविर के प्रत्येक पहलुओं पर गंभीर परिचर्चा एवं विचार विमर्श किए।

फलस्वरूप जो मुख्यबातें सामने आई उसको निम्नबिन्दुओं के आधार पर विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. मुख्य प्रबोधक श्री सोमदेव त्यागी द्वारा प्रस्तुत – जीवन विद्या की विषय वस्तु का प्रस्ताव।
2. प्रत्येक केन्द्रों पर नियुक्त सहायक प्रबोधकों की भूमिका।
3. एडूसेट तकनीक के लाभ एवं सुधार हेतु प्रस्ताव/सुझाव
4. जीवन विद्या ''चेतना विकास मूल्य शिक्षा'' और रा.मा.शि.अभि. की भविष्य की योजना पर प्रस्ताव।

1- Jh lkenzo R;kxh }kjk IkLrqr **thou fo|k dh fo"k;oLrq ij ppk ,oa leh{kk

1. समीक्षा बैठक में उपस्थित सभी सहायक प्रबोधकों ने केन्द्रों पर उपस्थित रहकर जो प्रत्यक्ष अनुभव और लोगों के विचार सुने उसके अनुसार सभी ने लगभग कहा कि – लोग यह प्रस्ताव सुनकर आश्चर्य चकित हुए कि वर्तमान शिक्षा केवल शिक्षित वर्ग पैदा कर रही है, जो न तो ठीक से जी पा रहा है न दूसरों को जीने दे रहा है। शिक्षा तो समझदारी पैदा करने के लिए होनी चाहिए। आज साक्षर भारत नहीं बल्कि समझदार भारत की आवश्यकता है।

   भारत कैसे समझदार बनेगा? समझदार व्यक्ति ईमानदार बनेगा, ईमानदारी से जिम्मेदारी का भाव पैदा होगा और जिम्मेदार व्यक्ति ही व्यवस्था बनाने के भागीदार होगा। आदमी समझदार कैसे बनेगा? इसका प्रस्ताव शिविर के 5 दिनों में लोगों तक ठीक से पहुॅचा परन्तु यह केवल सूचना मात्र ही रहा, लोगों को एकाएक यह विश्वास नहीं हो पा रहा है कि ''जीवन विद्या'' का यह प्रस्ताव सचमुच एक समाधान के रूप में आया है।

2. लोगों ने प्रायः सभी केन्द्रों में यह स्वीकार किया कि सरकारी मिडिया में भी यह बात ठीक से कही जा सकती है कि एक शिक्षक से लेकर आई. ए. एस., मंत्री, प्रायः सभी अपनी–अपनी जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभा रहे है यह इस बात का प्रमाण है कि इनकी लाख कोशिशों के बावजूद अव्यवस्था दिनो–दिन और बढ़ रहा है। एक बड़ा अधिकारी होने का मतलब यह नहीं है कि वह समझदारी से अपना सबकाम करता हों जबकि हम सब यह मानकर जी रहे है कि एक मंत्री, एक ऑफीसर, एक डॉक्टर, एक शिक्षक पढ़ा–लिखा है अतः वह समझदार होगा ही, ईमानदार होगा ही जिम्मेदार होगा ही। जबकि ऐसा बिलकुल नहीं है।

क्योंकि वर्तमान शिक्षा ने लोगों को शिक्षित किया हुनर दिया समझदारी नहीं दे पाया। अतः आगे शिक्षा का काम स्किल के साथ समझ भी देना होना चाहिए। अत सीखना, करना, सिखाना के साथ ''समझना'' जीना, समझाना'' को प्रयोग मे लाना होगा।

3. जीवन विद्या ''चेतना विकास मूल्य शिक्षा'' शिक्षा के सभी मापदण्डों पर खरा उतरा है क्योंकि

   - इसका विषयवस्तु किसी धर्म, सम्प्रदाय, चिन्हह प्रतीक से मुक्त है।
   - यह शिक्षा के माध्यम से सभी तक पहुचाया जा सकता है।
   - यह कोइ उपदेश नहीं है, इसका व्यावहारिक प्रयोग सम्भव है।
   - यह सभी के लिए एक सा सार्वभौम स्वरूप में हैं

- इसके माध्यम से किसी प्रकार की कोई नकारात्मक बातें नहीं कहीं गई जो लोगों को ठीक न लगा हो।

4. एक विषय विशेषज्ञ शिक्षक कैसा हो ? जिसके पास सभी का उत्तर मौजूद हो ऐसे प्रबोधक (शिक्षक) श्री सोम जी की प्रस्तुति, विषयवस्तु पर पकड़ और लगातार अकेले 5–5 दिन हजरों शिक्षको ंतक अपनी बात पहुचा पाये। सभी ने खूब तारीफ किए, और कहा कि समझा हुआ जीता हुआ आदमी में ही यह दम हो सकता है, वेतनभोगी, शिक्षित (आदमी) ऐसा नहीं कर सकता।
5. लोगों को यह पूरा विश्वास होते दिखा कि समय शायद बहुत लगेगा लेकिन व्यवस्था सुधरेगी तो यही विकल्प होगा दूसरा शायद नहीं। होगा भी तो उसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। प्रकृति में सभी का आचरण निश्चित है तो समझदारी से सभी मानव का आचरण भी निश्चित होगा ही तभी धरती से स्वर्ग बनेगा हर मानव देवता होगा। यह विश्वास लगभग 70 से 80 प्रतिशत लोगों को हुआ है। और इस दिशा में अपनी जिम्मेदार ीको ठीक से समझने की मंशा अधिकांश ने जाहिर किए हैं

व्यवस्था सुधारने शिक्षा संस्कार योजना शीघ्र स्कूली पाठयक्रम में शामिल करने की आवश्यकता सभी लोगों ने महसूस किया और एक मत से सुझाव भी दिए है कि शिक्षा का यह विकल्प शीघ्र तैयार हो वे सब इसका साक्षी बनने, सहयोगी बनने तैयार है। ताकि आदमी ठीक हो, परिवार ठीक, समाज ठीक, धरती ठीक हो दुनिया का हर आदमी यही चाहता है।

2- ,l- vkbZ-Vh- dsUnzksa esa fu;qDr lgk;d izcks/kdksa dh Hkwfedk

1. 15 दिवसीय इस अिभयान में इस बार एक नया प्रयोग किया गया था कि प्रत्येक एस. आई.टी. केन्द्रों में सहायक प्रबोधकों की नियुक्ति की गई थी जो 6 माह जीवनविद्या अध्ययन शिविर से गुजरे लोग थे या जीवन विद्या अभ्युदय संस्थान परिवार से जुड़े लोग थे जो स्वेच्छा से इस काम में लगे थे।
2. इनकी उपस्थिति से एक तो वहॉ व्यवस्था बनाने में एक बड़ा हाथ रहा। दूसरी बात वहॉ लोगों को समय पर आने जाने की स्थिति को इनकी उपस्थिति के कारण ही ठीक से कर पाये और सभी शिविरार्थियों दबाव में ही सही पूरे समय बैठकर विषयवस्तु को ग्रहण कर पाये।
3. सहायक प्रबोधकों की उपस्थिति से जो विषयवस्तु सोमजी द्वारा प्रस्तुत किया जाता था उस पर और स्पष्टता से वे लोगो को बता पाते थे, जिससे उनकी जिज्ञासा तुरन्त समाधानित हो जाते थे और आगे की कड़ी को वे ठीक से समझ पाने में समर्थ हो पाते थे।

4. जिस प्रभावी ढंग से मुख्य प्रबोधक सोम जी की प्रस्तुति होती थी उसी प्रभावी ढंग से प्रायः सभी सहायक प्रबोधकों की उपस्थिति ने लोगों को विषयवस्तु से कार्यक्रम से जोड़क जीवंत बनाकर रखने में सफल रहें। सभी ने स्वीकार किए और सुझाव दिए कि भविष्य में एडूसेट से होने वाले शिविर सहायक प्रबोधकों की उपस्थिति में ही हो तभी सफल होगा।
5. कई केन्द्रों में विद्युत अवरोध या तकनीकी कमी से प्रसारण बंद होने पर सहायक प्रबोधकों ने वहॉ जिस तरह अपनी बातों से लोगों तक विचार रखे प्रस्तुतियॉ दी और उन्हे सराहना मिली इससे यह स्पष्ट संदेश आया कि सहायक प्रबोधकों के कारण ही यह कार्यक्रम इतना प्रभावकारी ढंग से सम्पन्न हो पाया। अन्यथा सम्भव नहीं था।

3- ,MlsV rduhd dk ykHk ,oa lq/kkj gsrq iLrko rFkk lq>ko %&

1. आधुनिक संचार तकनीक का सूचना के रूप में किस तरह प्रयोग हो सकता यह मिशाल 15 दिवसीय शिविर के दौरान देखने को मिला। कम समय में अधिक से अधिक लोगों तक अपनी बात ठीक से पहुंचाने का एक ससक्त माध्यम है एडूसेट।
2. सभी केन्द्रो के सहायक प्रबोधको ने एकमत से स्वीकार किया कि जीवन विद्या की बात शीघ्रता से लोगों तक विद्यालय तक पहुंचाने मे एडूसेट एक सटीक माध्यम है। प्रदेश भर में फैले सभी केन्द्रों के माध्यम से आगे भी प्राथमिक एवं पूर्वमाध्यमिक स्कूलों के कार्यरत सभी शिक्षकों को इसके माध्यम से यह शिविर दिया जा सकता है।
3. एडूसेट प्रसारण को और गुणवत्ता युक्त बनाने जीवंत बनाने कि कुछ सुझाव लोगो ने दिए है, उन्होंने कहा कि सभी केन्द्रों को एस.सी.ई.आर.टी. से समय–समय पर जोडत्रते रहें ताकि सम्पर्क बना रहे। देखने वालो का उत्साह बना रहे। 15 दिनों मे एक भी बार यहॉ से (एस.सी.ई.आर.टी. स्टूडियों) नहीं जुड़ने वाले अनेक केन्द्रों में असंतोष देखा गया।
4. प्रसारण के दरमियान ठीक से बात नहीं होना एक बड़ी समस्या के रूप में देखा गया अर्थात जो केन्द्र लिंक होता था जुड़ता था जबकि वे ठीक से माईक में बोलते थे। इस तरह की खामियों को भविष्य में ठीक करने की बात सभी ने रखा।
5. कुछ केन्द्रों में बैठने की व्यवस्था और लाईट/माईक/कैमरा आदि का तकनीकि ज्ञान पर विशेष ध्यान देने की बात कहीं गई सभी से कहा कि इस हेतु कुछ ट्रेनिग इन्हें एस.सी.ई.आर.टी. स्टूडियों में दिया जाये इस पर सहमति भी बन गयी है। भविष्य में सहायक प्रबोधकों को कुछ तकनीकि जानकारी भी देकर एस.आई.टी. केन्द्रों में भेजने की बात हुई है।

4- Hkfo"; dh ;kstuk,a vkSj iLrko %&

1. RMSA के तहत् आगामी वर्षो में शिक्षकों को दिये जाने वाले प्रशिक्षण का विषयवस्तु क्या हो इस पर अब स्पष्ट रूपरेखा बन गई है कि सभी प्रशिक्षण जीवनविद्या मूल्य शिक्षा के प्रकाश में हो।
2. अब प्रत्येक विषय का विषय आधारित प्रशिक्षण भी इसी तर्ज पर होगा। विषय विशेषज्ञों को पहले विद्या'' से पारंगत किया जायेगा तब वे अपने विषय को मूल्य शिक्षा के आधार पर किस तरह ''मानवीय विषय'' बनाकर पढ़ा सकेंगे इस पर विचार करके विषय वस्तु पढ़ाया जायेगा। इस पर स्पष्टता बनी है।
3. शिक्षकों को प्रभावी ढंग से विषयों को पढ़ाने की शिक्षण विधि सही समझ के आधार पर विकसित की जा सकती है इस बात का भरोसा हुआ हैं

अब इतिहास कैसे पढ़ेगे ?

विज्ञान कैसे पढ़ेग ?

विज्ञान और मनोविज्ञान कैसे पढ़ेंगे ?

अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र का विकल्प क्या होगा। जिसको पढ़ाया जाये ?

तमाम विषयों, मुद्दो पर आनेवाले समय में विमर्श कर हल निकलेगा और सभी शिक्षक अब अपने विषय को पढ़ाते वक्त आनंद का अनुभव करेंगे।

जब शिक्षक आनंद से पढ़ायेंगे। तो पढ़ने वाला विद्यार्थी भी पढ़कर खुश होगा। इन्हीं विश्वास को इस दो दिनी समीक्षा बैठक में लोगों ने पाया और अपनी–अपनी जिम्मेदारी को पूरा कर पाने का संकल्प लिया है।

vkj- ,l- c?ky]
d-d- lkg
idk"B iHkkjh]
pruk fodkl eY; f'k{kk]
,l-lh-b-vkj-Vh-] jk;iqj